राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) -2005

राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) -2005 राष्टीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ;NCERT नई दिल्ली के तत्वाधान में राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) -2000 की समीक्षा हेतु प्रोफेसर यशपाल की अध्यक्षता में एक राटिय संचालन समिति और इक्किस राष्टिय फोकस समूहों का गठन किया गया। राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) -2005 को बनाने का कार्य NCERT के तात्कालिक निदेशक प्रोफेसर कृष्ण कुमार के नेतृत्व में संपन्न हुआ।

इस दस्तावेज में कुल 5 अध्याय है।

राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) -2005 का अनुवाद संविधान की आठवी अनुसूची में दी गई सभी भाषाओं में किया गया है। इस समिति ने पाठ्यक्रम को अधिक व्यवहारिक बनाने पर जोर दिया। इसमें शिक्षा को बालकेन्द्रित बनाने, रटंत प्रणाली से मुक्ति दिलाने, परीक्षा प्रणाली में सुधार करने और लिंग जाति धर्म आदि के आधारों पर होने वाले भेदभावों को समाप्त करने की बात कही गई है। शोध आधारित दस्तावेज तैयार करने के लिए 21 राष्टीय फोकस समूह बनाए गए जो विभिन्न विषयों पर केंद्रित थे। इसके नेतृत्व की जिम्मेंदारी संबंधित क्षेत्र के विषय विशेषज्ञों को दी गई थी।

राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) -2005 का मुख्य सूत्र लर्निंग विदाउट बर्डन है।

राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) -2005 का मुख्य उददेश्य बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोडना है। यह सिद्धान्त किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभावंश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्टीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादि विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दिवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। राष्टीय पाठ्यचर्या की दस्तावेज 2005 का प्रारंभ प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री , नोबेल पुरस्कार विजेता तथा राष्टीय गान के निर्माता रविंद्र नाथ टैगोर के निबंध सभ्यता और प्रकृति के एक उद्धरण से हुआ है।

NCF 2005 वेट को मिशन के मोड में प्रारंभ करता है। यहां वेट का अर्थ है –

V - Vocational व्यवसायिक

E – Education शिक्षा

T – Training प्रशिक्षण

राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) -2005 के 5 मार्गदर्शक सिद्धांत

- ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ना।
- थ्शक्षा रटंत प्रणाली से मुक्त हो, यह सुनिश्चित करना।

- पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन हो वह चहुंमुखी विकास के अवसर उपलब्ध करवाना बजाए इसके कि वह पाठ्यपुस्तक केन्द्रित हो।
- परीक्षा को और लचीला बनाना और कक्षा–कक्ष की गतिविधियों से जोड़ना।
- एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास करना जिसमें लोकतात्रिक राज्य व्यवस्था के अंतर्गत राष्टीय चिंताए सम्मिलित हो।

राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) -2005 के विषय क्षेत्र

1. भाषा – भाषा शिक्षा, घरेलू/प्रथम भाषा या मातृभाषा शिक्षा, द्वितीय भाषा सीखना।
2. गणित – स्कूली गणित का दर्शन, कंप्यूटर विज्ञान
3. विज्ञान
4. सामाजिक विज्ञान
5. कला शिक्षा
6. स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा
7. व्यवसायिक शिक्षा
8. शांति के लिए शिक्षा

राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) -2005 की विशेषताएं –

1. प्राथमिक स्तर की शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए तथा इसके पश्चात् आवश्यकतानुसार अन्य भाषाएं सीखी जा सकती है।
2. पाठ्यक्रम निर्माण में अभिभावकों के हितों और समझ को महत्व।
3. विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रूचि जागृत करने को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाए ताकि शिक्षा रूचिप्रद हो सके।
4. NCF 2005 में राष्टीय एकता पर पर्याप्त बल दिया गया है।
5. बिना बोझ के अधिगम कार्यक्रम को शामिल किया गया है।
6. छात्रों के स्वतंत्र विकास हेतु प्रावधान किया गया है।
7. बालक को परीक्षा के बोझ से मुक्त करते हुए मासिक एवं वार्षिक परीक्षा का प्रावधान जिससे छात्रों की परीक्षा के प्रति रूचि विकसित हो सके।
8. पर्यावरण शिक्षा पर पर्याप्त बल।
9. शिक्षा को व्यवसायोंमुखी बनाने का प्रयास।
10. NCF 2005 स्कूली शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर कला शिक्षा विषय को लागू करना चाहता है। कला शिक्षा विषय को विद्यालयसे जोड़ने का उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत की प्रशंसा करना तथा छात्रों के व्यक्तित्व एवं मानसिक स्वास्थ्य को विकसित करना है।
11. NCF 2005 के अनुसार ज्ञान की प्रकिया में समुदाय की साझेदारी जरूरी है।
12. करके सीखने पर बल।
13. राष्टीय महत्व के बिंदुओं को पाठ्यक्रम में जोड़ना।
14. सहशैक्षिक गतिविधियों में छात्रों के अभिभावकों को भी जोड़ना चाहिए।
15. पुस्तकालय में छात्रों को खुद पुस्तक का चुनाव करना चाहिए।

16. दंड व पुरस्कार की भावना की भावना को सीमित रूप में प्रयोग करना चाहिए।
17. सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मनोरंजन के स्थान पर सौंदर्यबोध को बढ़ावा देना चाहिए।
18. अध्यापकों के प्रशिक्षण और विद्यार्थियों के मूल्यांकन को सतत आंकलन के रूप में अपनाना चाहिए।
19. अध्यापकों को अकादमिक संसाधन व नवाचार आदि समय समय पर पहुचाएं जाएं।
20. छात्रों के माता–पिता या अभिभावकों को सख्त संदंश दिया जाना चाहिए कि छसत्रों को छोटी उम्र में कुशल बनाने की आकांक्षा रखना गलत है।
21. सूचना को ज्ञान मानने से बचना चाहिए।
22. थ्वशाल पाठ्यक्रम व मोटी मोटी पस्तके शिक्षा प्रणाली की असफलता का प्रतीक है।
23. छब्ब् 2005 का मानना है कि पाठ्यपुस्तके को समाज के स्वीकृत मूल्यों को लागू करने के लिए एक माध्यम के रूप में देखा जाना चाहिए।
24. NCF 2005 का मानना है कि सीखना अपने चरित्र में सक्रिय व सामाजिक है।

NCF 2005 की आवश्यकता एवं महत्व

1. छात्रों की आवश्यकता एवं रूचि के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण।
2. पाठ्क्रम निर्माण में अध्यापक की सहायता।
3. शिक्षण विधियों में सुधार और विकास हेतु।
4. अभिभावकों को संतुष्टि प्रदान करने के लिए।
5. पाठ्यक्रम में नवीन तथ्यों एवं शोधों के निष्कर्षो को शामिल करने हेतु।
6. कक्षा–कक्ष शिक्षण को प्रभावशाली करने में ।
7. भाषा कीसमस्या के निराकरण करने में।
8. नैतिक एवं मानवीय मूल्यों में वृद्धि करने में।
9. शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु।

NCF 2005 के सिद्धांत

1. रूचि का सिंद्वात – शिक्षक द्वारा शिक्षण कार्य करने एवं विद्यार्थी द्वारा उसे सही समढने के लिए रूचि होना अत्यंत आवश्यक है। अतः रूचि के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया।
2. मनवता का सिद्वांत – मानवीय मूल्यों केविकास को प्राथमिकता देना राष्टीय पाठृयक्रम का एक अत्यावश्यक लक्ष्य है। इसलिए पाठ्यक्रम में शुरू से ही ऐसे प्रकरणों का समावेश किया गया, जिसमें विद्यार्थी में प्रेम, परोपकार, सहिष्णुता, सहयोग की भावना का विकास हो सके।
3. एकता का सिद्वांत – समाज में निहित धर्म, संस्कृति एवं परम्पराओं को एक सूत्रों में बांधनते हुए एवं सांप्रदायिक सद्भाव को ध्यान में रखते हुए ही प्राठ्यक्रम का विकास किया गया है।
4. नैतिकता का सिद्वांत – पाठ्यक्रम में प्रारंभिक स्तर पर ही प्रेरणदायक कहानियों के माध्यम से बालकों में नैतिकता के विकास को महत्व दिया है।

5. सामाजिकता का सिद्वांत
6. उपयोगिता का सिद्वांत
7. संतुलित विकास का सिद्वांत

NCF 2005 के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्वांत

- सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में सहसंबधित
- बालकेन्द्रित पाठ्यक्रम
- उच्च कक्षाओं की आवश्यकता पूर्ति का सिंद्वात
- उपयोगिता का सिंद्वात
- लचीला पाठ्यक्रम
- विभिन्न स्तरों के अनुसार पाठ्यक्रम
- रोचक पाठ्य सामग्री का सिद्वांत
- विषयों से सहसंबधित
- क्रियाशीलता का सिद्वांत
- क्रमबद्वता का सिद्वांत
- मनोवैज्ञानिक सिद्वांतों के अनुरूप पाठ्सक्रम
- विज्ञान विषय के वैज्ञानिको का पाठ्यक्रम
- सृजनात्मकता का सिद्वांत
- व्यापक एवं संतुलन का सिद्वांत

NCF 2005 के दोष / बाधाएं

1. यौन शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल नही किया जाना।
2. पाठृयक्रम का उचित क्रियान्वयन नही हो पाना।
3. आर्थिक समस्या के कारण कंप्युटर शिक्षा पर पर्याप्त बल नही दिया गया।
4. भाषावाद।

NCF 2005 के लक्ष्य

1. अभिभावकों की आकाक्षाओं की पूर्ति।
2. शिक्षण संसाधनों में समन्वय स्थापित करना।
3. स्तर के अनुकूल शिक्षण शिक्षण विधियों का प्रयोग।
4. अध्यापकों में आत्मविश्वास का विकास।
5. शारीरिक और मानसिक विकास में समन्वय स्थापित करना।
6. विद्वाथिर्यो का सर्वांगीण विकास करते हुए उनमें मानवीय मूल्यों का विकास करना।
7. प्रभावशाली शिक्षण व्यवस्था स्थापित करना।
8. विद्यार्थियों में पढ़ने के प्रति रूचि जागृत करना।
9. भारतीय संस्कृति का संरक्षण एवं विकास राष्टीय एकता का विकास।

NCF 2005 में शिक्षक की भूमिका

इसमें शिक्षक विद्यार्थियों के ज्ञान के निर्माण में सहायता कर्ता के रूप में भूमिका निभाता है।

NCF 2005 के अनुसार मूल्यांकन के प्रावधान –

यह अधिगम क्रिया में सहभागी बनाने के लिए सूचना देने की बजाए चर्चा व वाद विवाद के द्वारा सीखने को बल देता है अतः विद्यार्थी की विविध अभीरुचियां और शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर आकलन प्रक्रिया में भी बदलाव आवश्यक है एन सी ऐफ आकलन न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त करने को साल के अंत की बजाय पाठ आधारित बनाया जाए ।

आकलन पाठ की योजना का एक ऐसा हिस्सा है जो बच्चों की क्षमताओं दक्षताओं एवं अवधारणाओं को पुख्ता बनाएं ।

- बच्चों की असमर्थताओ की पहचान और उपयुक्त प्रेरणा देने में आकलन महत्वपूर्ण है ।

बच्चों पर जबरदस्ती लिखने पढ़ने या अंकगणित सीखने का दबाव ना बनाया जाए।

- आकलन जीवन के व्यवहारिक कौशल सीखने के एवं अनुभव से जुड़ा होना चाहिए पास और फेल की अवधारणा के बदले पुन: परीक्षा लिखे जाने की आवश्यकता है।
- देश में अधिकतर परीक्षा बोर्ड वैकल्पिक अध्ययन का अवसर नहीं देते हैं 2 भाषाएं, गणित , विज्ञान और सामाजिक विज्ञान को परीक्षापयोगी माना जाता है इसे बदलने की और अधिक वैकल्पिक बनाने की आवश्यकता है यह वैकल्पिक विषय भविष्य में पैशे व विद्यार्थी रुचि के आधार पर हो।
- मूल्यांकन बच्चों को डर के दबाव में अध्ययन के लिए प्रेरित करना नहीं है बच्चों को होशियार, समस्या ग्रस्त, मंद गति से सीखने वाला, औसत यह तमगा देना उचित नहीं है बल्कि शिक्षक औपचारिक आकलन की बजाए शैक्षिक योजना व व्यक्तिगत ध्यान देकर उपचारात्मक शिक्षण कर सकता है ।
- सतत आकलन, सतर्क अवलोकन एक सतत प्रक्रिया है । रिपोर्ट कार्ड में प्रत्येक विद्यार्थी का निरंतर अवलोकन सार्थक व गुणात्मक आकलन का आधार बनाती है। शिक्षक की साप्ताहिक डायरी विद्यार्थी रिपोर्ट का मुख्य आधार होना चाहिए जिसमें सीखने में आने वाली कठिनाइयां व उपचार शामिल हो ।
- एन सी ऐफ 2005 खुली पुस्तक परीक्षा पत्र बनाने के प्रयासों को महत्व देता है प्रश्न पत्र में खुले उत्तर वाले तथा ऐसे प्रश्न का उपयोग करना चाहिए जिनका कोई एक उत्तर नहीं होता, जो बच्चों में चिंतन शक्ति वह सृजनात्मकता विकसित करने में सहायक होंगे।
- न केवल अधिगम के परिणाम बल्कि अधिगम के अनुभवों का भी मूल्यांकन होना चाहिए जो व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तर पर हो सकता है इस तरह अनुभव उन्हें मन की क्षमताएं प्रदान करता है जो सीखने के लिए सीखना दर्शाता है।
- स्व मूल्यांकन प्रतिपुष्टि कक्षा 5 से शामिल किया गया है।
- NCF 2005 आकलन के चरण

1. पूर्व प्राथमिक कक्षा 1 व 2
2. द्वितीय चरण कक्षा 3 से 8 तक कक्षा 5 से आकलन शामिल
3. माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक कक्षा 9 से 12

कक्षा 10 में बोर्ड वैकल्पिक होना चाहिए एन सी ऐफ कंडिका 5.3 में परीक्षा संबंधी सुधारों को शामिल करते हुए कक्षा दसवीं वह 12वीं की परीक्षाओं का तनाव कम करना चाहिए।

- परीक्षा को स्मृति आधारित की बजाए विश्लेषण मूल्यांकन एवं व्यवहारिक उपयोग ऊपर होना चाहिए।
- परीक्षा लचीली समय अवधि वाली जिसमें 25% से 40% संक्षिप्त उत्तर वाले एवं बाकी बहुविकल्पीय प्रश्न होना चाहिए। मौखिक व समूह कार्य मूल्यांकन को बढ़ावा देता है।
- परीक्षा सभी के लिए एक समान परीक्षा की बजाए विद्यार्थी केंद्रित व रोजगार केंद्रित होनी चाहिए।